आर्थिक भूगोल की परिभाषा एवं विषय-क्षेत्र
[DEFINITION AND SCOPE OF ECONOMIC GEOGRAPHY]

आर्थिक भूगोल मानव भूगोल की वह महत्वपूर्ण शाखा है, जिसके अन्तर्गत पृथ्वी के धरातल पर निवास करने वाले मानव की आर्थिक क्रियाओं और उनकी क्षेत्रीय भिन्नताओं और विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त मानवीय क्रियाओं के स्थानिक वितरण अर्थात् उनकी अवस्थितियों तथा सम्बन्धों का अध्ययन भी इसके अन्तर्गत किया जाता है।

इस विश्व का समाज, संस्कृति एवं सम्पूर्ण व्यवस्था में चाहे वह विकसित देशों की हो या विकासशील एवं स्वल्प विकसित देशों की, सभी में भौतिकवाद का गहराई तक प्रभाव स्पष्टत: दिखाई देता है। इसी से अर्थतन्त्र, आर्थिक प्रक्रियाओं के विविध स्वरूपों एवं घटकों की महत्ता को समझा जा सकता है। यह सभी तथ्य वर्तमान में आर्थिक भूगोल से निकट से जुड़े हुए हैं। अत: **"आर्थिक भूगोल, मानव के विविध आर्थिक क्रियाकलापों के बहुआयामी एवं पदानुक्रमी विकास से भूतल पर क्षेत्रों के मध्य ऐसे क्रियाकलापों के कारण मिलने वाली विविधताओं, विषमताओं एवं विभिन्नताओं का अध्ययन है।"**

आर्थिक भूगोल की परिभाषाएँ (Definitions of Economic Geography)

कुछ प्रमुख भूगोलवत्ताओं द्वारा प्रस्तुत की गई परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं–

आधुनिक आर्थिक भूगोल के जनक **चिशोल्म** के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत उन सब भौगोलिक परिस्थितियों का वर्णन आता है, जो वस्तुओं की उत्पत्ति, उनके विनिमय एवं स्थानान्तरण पर प्रभाव डालती हैं। आर्थिक भूगोल का महत्व इस बात में है, कि इसके द्वारा किसी प्रदेश के वाणिज्यिक (व्यावसायिक) विकास की दशा का ज्ञान हो जाता है और यह पता चलता है कि उस पर भौगोलिक दशाओं का क्या प्रभाव पड़ता है।"[1]

प्रो. शॉ के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत इन बातों का अध्ययन किया जाता है, कि किस प्रकार मानव की विभिन्न जीविकोपार्जन क्रियाएँ विश्व के उद्योगों, आधारभूत साधनों और औद्योगिक वस्तुओं की प्राप्ति हेतु किये गए विकास के अनुरूप होती हैं।"[2]

प्रो. जॉन्स और **डार्कनवाल्ड** के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत मानव के उत्पादक व्यवसायों का अध्ययन किया जाता है। वह इस बात का संकेत करता है, कि क्यों प्रदेश विशेषों में किसी वस्तु का उत्पादन और वहाँ से निर्यात होता है तथा क्यों अन्य प्रदेशों में इनका आयात एवं उपभोग किया जाता है।"[3]

अलेक्जेण्डर जे. डब्ल्यू. के अनुसार, "आर्थिक भूगोल सम्पत्ति के उत्पादक, विनिमय तथा उपयोग से सम्बन्धित मानवीय क्रियाओं के (पृथ्वी के धरातल पर) स्वरूप में पाई जाने वाली क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन है।"[4]

---

1. "Economic Geography embraces all geographical conditions affecting the production, transport and exchange of commodities. Its chief use is to enable into form some reasonable estimate of the future course of commercial development, so far as that is governed by geographical conditions." —Chisholm : *Fundamentals of Economic Geography.*
2. "Economic Geography is concerned with problems of making a living, with World industries with basic resources and industrial commodities." —E. B. Shaw : *Economic Geography.*
3. "Economic Geography deals with the productive occupation and attempts to explain why certain regions are outstanding in the production and exploitation of various articles and why others are significant in the importation and utilisation of these products."
—Prof. Johns & Darkenwald : *Economic Geography.*
4. "Ecocomic Geography is the study of real variations on the Earth surface in man's activities related to producing, exchanging and consuming wealth."
—Alexander, J. W. : *Economic Geography.*

मरफी (R. E. Murphy) के अनुसार, "आर्थिक भूगोल में मनुष्य के जीविकोपार्जन की विधियों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर मिलने वाली समानता एवं विषमता का अध्ययन किया जाता है।"[1]

रूडॉल्फ वेटजिन्स (Rudolf Wetgens) के अनुसार, "आर्थिक भूगोल विभिन्न प्रदेशों में पृथ्वी की संसाधनता तथा मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं की अन्योन्य क्रिया का अध्ययन एवं तत्सम्बन्धी सार्थक परिणामों के वितरण की व्याख्या करता है।"

गाट्ज (Gotz) के अनुसार, "आर्थिक भूगोल में विश्व के विभिन्न भागों की उन विशेषताओं का वैज्ञानिक विवेचन किया जाता है, जिनका वस्तुओं के उत्पादन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।"[2]

डॉ. हंटिंगटन के शब्दों में, "मानव व्यवसाय, मानव दक्षता तथा मानव की आवश्यकताओं (जैसे-कला, धर्म, प्रशासन, शिक्षा एवं सभ्यता) के अन्य पक्षों पर भौगोलिक वातावरण के प्रभाव की सीमा का अध्ययन आर्थिक भूगोल में किया जाता हैं"

रूरबैक के अनुसार, "आर्थिक भूगोल एक क्षेत्र के आर्थिक जीवन का वर्णन है, जिसके अन्तर्गत भौगोलिक वातावरण के नियन्त्रण या प्रभाव को आर्थिक जन-जीवन पर देखा जा सके।"

अत: उपर्युक्त सभी परिभाषाओं से स्पष्ट होता है, कि आर्थिक भूगोल जीविकोपार्जन की विविध विधियों और उनकी समस्याओं से सम्बन्धित विज्ञान है, जिसमें भूतल के आधारभूत संसाधनों और उनसे सम्बन्धित मानव-क्रियाओं के मध्य पाये जाने वाले क्षेत्रवार व परिवर्तनशील सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, **आर्थिक भूगोल मानव द्वारा भूतल के प्राकृतिक संसाधनों के विविध प्रकार से विदोहन से सम्बन्धित विज्ञान है, जिसमें उनके उत्पादन, परिवहन, वितरण और उपयोग का अध्ययन किया जाता है।**

अत: संक्षेप में यह कहा जा सकता है, कि आर्थिक भूगोल शान्त व स्थिर अथवा मृत विज्ञान न होकर अन्य भौतिक विज्ञानो की भाँति गतिशील, विकासशील एवं गत्यात्मक (Dynamic) विज्ञान है।

आर्थिक भूगोल की प्रकृति एवं विषय-क्षेत्र
(NATURE AND SCOPE OF ECONOMIC GEOGRAPHY)

पूर्व में दी गई परिभाषाओं से स्पष्ट है, कि आर्थिक भूगोल की प्रकृति विविध, बहुरूपी एवं व्यापक है। इसमें देश एवं काल के अनुसार क्षेत्रवार प्रत्येक बार निरन्तर परिवर्तन आते रहे हैं। इसमें संसाधन उपलब्धि के स्तर एवं उन पर निर्भरता के स्वरूप के अध्ययन का विशेष महत्व रहा है। इसी कारण **आर्थिक भूगोल का विषय-क्षेत्र** बहुत ही व्यापक है। आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत मानव की आर्थिक क्रियाओं के वितरण की विवेचना, सम्बन्धित क्षेत्र के भौतिक व सांस्कृतिक वातावरण के विभिन्न स्वरूपों को ध्यान में रखकर की जाती है। इसी आधार पर आर्थिक भूगोल के विषय-क्षेत्र को निम्नलिखित चार वर्गों में रखा जा सकता है—

(i) किसी देश तथा उसके प्रदेशों की प्राकृतिक दशाएँ तथा प्राकृतिक संसाधन;

(ii) मानवीय विशेषताओं के मानवीय घनत्व, वितरण आदि विविध पहलू;

(iii) मानवीय संस्कृति, तकनीक तथा पूँजी;

(iv) मानव की विभिन्न आर्थिक क्रियाओं के स्थानिक वितरण का अध्ययन तथा उन पर प्राकृतिक संसाधनों तथा प्राकृतिक दशाओं का प्रभाव।

आर्थिक भूगोल में, मानव की आर्थिक क्रियाएँ कब, कहाँ और कैसे होती हैं, इस तथ्य का विश्लेषण किया जाता है। वस्तुत: आर्थिक भूगोल, भूगोल की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जिसमें भूगोल की निम्नलिखित पाँच महत्वपूर्ण शाखाएँ सम्मिलित हैं—

आर्थिक भूगोल की प्रमुख शाखाएँ (Important Branches of Economic Geography)

आर्थिक भूगोल के गहन अध्ययन के लिए आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत अग्रलिखित 5 शाखाओं को सम्मिलित किया जाता है।

---

1. "Economic Geography has to do with similarites and differences from place to place in the ways people make a living." —R. E. Murphy : *An Introduction to Geography*
2. "Economic Geography makes a scientific investigation of nature of World areas in their direct influence on the production of goods." —*Gotz*

1. **प्राथमिक उद्यमों का भूगोल** (Geography of Primary Occupations)—शिकार करना, लकड़ी काटना, भोजन संग्रह, पशुचारणता, आदिम मत्स्यपालन तथा प्राचीन पद्धति से किया जाने वाला खनन व कृषि व्यवसाय आर्थिक भूगोल की इस शाखा में सम्मिलित प्रमुख व्यवसाय हैं, जिनके वितरण प्रतिरूप का अध्ययन किया जाता है।

2. **कृषि भूगोल** (Agricultural Geography)—आर्थिक भूगोल की इस शाखा में कृषि फसलों के अतिरिक्त व्यावसायिक स्तर पर किया जाने वाला मत्स्यपालन, मुर्गीपालन तथा वन उद्यम सम्मिलित होते हैं।

3. **औद्योगिक भूगोल** (Industrial Geography)—आर्थिक भूगोल की इस शाखा के अन्तर्गत लघु, मध्यम तथा वृहद् स्तर के उद्योगों से जुड़े विभिन्न पक्षों का अध्ययन सम्मिलित होता है।

4. **परिवहन भूगोल** (Geography of Transportation)—मानव द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले परिवहन के विभिन्न साधनों यथा सड़क मार्ग, रेल मार्ग, वायु मार्ग तथा जलमार्गों का स्थानिक दृष्टिकोण से किया जाने वाला अध्ययन इस शाखा में सम्मिलित होता है।

5. **व्यापार व वाणिज्य भूगोल** (Geography of Trade and Commerce)—आर्थिक भूगोल की इस शाखा में मानव द्वारा किए जाने वाले व्यापारिक तथा वाणिज्यिक क्रियाकलापों का स्थानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है।

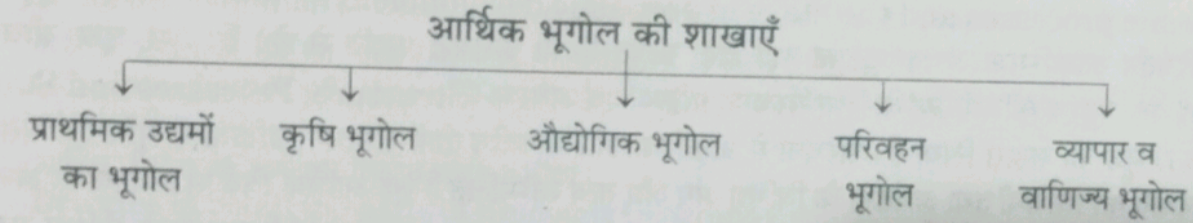

डॉ. जगदीश सिंह व काशीनाथ सिंह के अनुसार आर्थिक भूगोल का विषय क्षेत्र (Scope of Economic Geography According to Dr. J. Singh And K.N. Singh)

डॉ. जगदीश सिंह तथा **काशीनाथ सिंह** के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के विषय क्षेत्र में मानव के वे सभी प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक तथा चतुर्थक क्रियाकलाप, जो ठोस रूप से भूसतह पर दृष्टिगोचर होते हैं, सम्मिलित होते हैं। उदाहरण के लिए कृषि, खनन, उद्योग, परिवहन आदि ऐसे आर्थिक कार्य हैं, जो भूसतह पर मूर्तिरूप में दिखाई देते हैं, लेकिन राजस्व व टैक्स प्रणाली आदि ऐसे आर्थिक कार्य जो भूसतह पर दृष्टिगोचर नहीं होते हैं, आर्थिक भूगोल के अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित नहीं होते। वस्तुतः भूसतह पर अपने चिह्न छोड़ने वाले सभी आर्थिक क्रियाकलाप आर्थिक भूगोल का मूलाधार होते हैं।"

डॉ. जगदीश सिंह तथा **काशीनाथ सिंह** ने आर्थिक भूगोल के विषय क्षेत्र को व्यापक बताते हुए उसके अन्तर्गत मानव-वातावरण तन्त्र परिधि में निम्नलिखित 4 पक्षों को सम्मिलित किया है—

1. विभिन्न आर्थिक तत्वों तथा कार्यों का प्रादेशिक स्तर पर मिलने वाला स्थानिक या भूवैन्यासिक संगठन प्रतिरूप।
2. तकनीकी विकास के सन्दर्भ में कार्यात्मक संगठन में समायोजन की प्रक्रिया।
3. अन्तर्प्रादेशिक (Inter-Regional) एवं प्रादेशान्तरिक (Inter-regional) अन्तर्क्रिया।
4. उक्त तीनों का पर्यावरण तथा गुणात्मक जीवन स्तर पर पड़ने वाला दीर्घकालीन प्रभाव।

आर्थिक भूगोल की मौलिक संकल्पनाएँ
(FUNDAMENTAL CONCEPTS OF ECONOMIC GEOGRAPHY)

आर्थिक भूगोल की मौलिक संकल्पनाएँ आर्थिक भूगोल का स्वरूप व्यक्त करती हैं। आर्थिक भूगोल की संकल्पनाएँ परस्पर अन्तर्सम्बन्धित एवं गुम्फित सम्मिश्रण (Complex whole) के रूप में विषय को सर्वांगीण स्वरूप प्रदान करती हैं। आर्थिक भूगोल की संकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) **आर्थिक भूदृश्यों की संकल्पना** (The Concept of Economic Landscape)—इसका उद्भव जर्मन शब्द लैण्डशाफ्ट (Landschaft) से हुआ है। यह आर्थिक भूगोल की आधारभूत संकल्पना है।

इससे आर्थिक विशेषताओं अर्थात् प्रादेशिक अर्थतन्त्र संगठन की अभिव्यक्ति होती है। अर्थतन्त्र में विविध
जैसे—कृषि, उद्योग, उत्खनन, व्यापार आदि से सम्बन्धित विभिन्न तत्वों, वस्तुओं, उपकरणों आदि का समुच्च
स्वरूप आर्थिक भूदृश्य में उभरता है, जिससे प्रादेशिक आर्थिक तन्त्र (Regional Economy) की समष्टि
निरूपण होता है।

(2) **आर्थिक भूदृश्य स्थैतिक नहीं वरन् गत्यात्मक है, जिसका निरन्तर परिवर्तन तथा सतत् व
विकास होता है** (Economic Landscape is not a static but dynamic element experien
ing continuous change and Constant evolution)—आर्थिक भूदृश्य एक ओर मनुष्य के तात्कालि
आर्थिक कार्यों को प्रभावित करता है, तो दूसरी ओर इन कार्यों से प्रभावित होकर स्वयं परिवर्तित भी होता रहता
जैसे—एक निर्वाहक आर्थिक तन्त्र (Subsistence Economy) प्रधान आर्थिक भूदृश्य में भी क्रम
औद्योगीकरण के कारण आमूल परिवर्तन होना सम्भव है। इसी संकल्पना के आधार पर वेबर और अन्य विद्व
ने क्रम विकास उपागम (Evolutionary Approach) को अपनाकर आर्थिक तन्त्र के विभिन्न उद्योगों
स्थापना एवं सामान्य आर्थिक विकास के सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं।

(3) **वर्तमान आर्थिक भूदृश्य संसाधन, संरचना, आर्थिक प्रक्रिया एवं आर्थिक विकास की अवस्था
का द्योतक है** (Present economic landscape reflects the resources structure, eco
nomic processes and the stage of economic development)—गत्यात्मक आर्थिक भूदृश्य में
परिवर्तन आकस्मिक अथवा छुटपुट नहीं होते, प्रत्युत किसी क्रमबद्ध पद्धति से होते हैं। एस. एच. बीवर ने
आर्थिक भूदृश्य की व्याख्या के लिए संरचना, प्रक्रिया एवं अवस्था (Structure, Processes and Stage)
के त्रिसूत्र का सहारा लिया है। संरचना में प्राकृतिक और मानवीय दोनों संसाधन, प्रक्रिया में भूमि एवं संसाधन
उपयोग की विधियाँ तथा अर्थतन्त्र के विभिन्न अंग और तत्व सम्मिलित हैं एवं आर्थिक विकास अवस्था के अन्तर्गत
किसी भी आर्थिक तन्त्र में संसाधन उपयोग की प्रक्रिया किस हद तक प्रभावशाली हुई है तथा उसके विभिन्न अवयव
किस सीमा तक सुसंगठित हैं, दर्शाते हैं।

(4) **आर्थिक क्रियाकलाप की अवस्थिति एवं स्थापन** (Location and Localization of Eco
nomic activities)—अर्थतन्त्र के क्षेत्रीय संगठन को समझने के लिए इसके आन्तरिक संघटक तत्वों एवं कार्यों
का विश्लेषण अनिवार्य होता है। इस दिशा में सर्वप्रथम तत्व अथवा कार्य विशेष की अवस्थिति एवं स्थापना की
विवेचना आवश्यक है, जैसे—भारत में लोहा इस्पात उद्योग की अवस्थिति की विवेचना करनी है, तो केवल
कारखाने किन स्थलों पर स्थित हैं, यही नहीं वरन् इस्पात निर्माण से सम्बन्धित तत्वों, जैसे—कच्ची सामग्री, स्रोत,
कच्चा लोहा, कोयला, चूना पत्थर, मैंगनीज आदि, श्रम आपूर्ति क्षेत्र, बाजार, परिवहन, जल आपूर्ति आदि तत्वों
का भी अध्ययन आवश्यक है। अतएव अवस्थिति निर्धारण में उन सभी तत्वों के क्षेत्रीय अन्तर्सम्बन्ध की विवेचना
समाहित है, जिनका कार्य विशेष के उत्पादन, वितरण एवं उपभोग से किस प्रकार का सम्बन्ध है।

(5) **क्षेत्रीय आर्थिक भिन्नताजन्य आर्थिक प्रदेशों की संकल्पना** (The Concept of Economic
Regions arising out of areal economic differentiation)—विभिन्न आर्थिक कार्यों के अलग-अलग
वितरण प्रतिरूप व आर्थिक भूदृश्य में भिन्नता मिलती है, क्योंकि प्राकृतिक, जैविक एवं सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के
कारण उनकी परस्पर सम्बद्धता भी भिन्न प्रकार की होती है, जैसे—कृषि उद्योग, उत्खनन, व्यापार, तृतीयक कार्य
आदि में प्रत्येक विश्व वितरण प्रतिरूप अलग-अलग होता है। इनकी परस्पर सम्बद्धता भी भिन्न-भिन्न होती है। ये
सभी कार्य विश्व में न्यूनाधिक मात्रा में मिलते हैं, परन्तु उनके परस्पर सम्बद्ध स्वरूप में प्रादेशिक भिन्नता हो जाती
हैं। अत: आर्थिक तत्व अथवा तत्व समूह पर आधारित होकर कृषि प्रदेश, औद्योगिक प्रदेश आदि का सीमांकन
किया जा सकता है। साथ ही साथ क्षेत्रीय सम्बद्धता की समरूपता के आधार पर आर्थिक प्रदेशों का सीमांकन
किया जा सकता है। इस प्रकार आर्थिक प्रदेशों के माध्यम से आर्थिक भूदृश्य एवं प्रकारात्मक वर्गीकरण
(Typology) करने एवं उनके सम्यक् विवेचन में सहायता मिलती है।

(6) **प्रादेशिक कार्यात्मक अन्योन्यक्रिया** (Spatial Functional Interaction)—आर्थिक प्रदेशों
में कार्यात्मक अन्तर्सम्बन्ध होते हैं। क्रम विकास के लिए यह अन्तर्सम्बन्ध अनिवार्य होता है। आधुनिक विशेषीकरण
(Specialization) तथा वृहत् पैमाने पर उत्पादन के युग में कोई भी आर्थिक कार्य सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित